अध्याय 4: हार की जीत

विषय-सूची 6 प्रश्नावली · 19 प्रश्न

प्रश्नावली 4.1	पाठ से (मेरी समझ से)	2 प्रश्न
प्रश्नावली 4.2	शीर्षक (ग) — वचन	1 प्रश्न
प्रश्नावली 4.3	पंक्तियों पर चर्चा	5 प्रश्न
प्रश्नावली 4.4	सोच-विचार के लिए	2 प्रश्न
प्रश्नावली 4.5	कैसे-कैसे पात्र	3 प्रश्न
प्रश्नावली 4.6	मन के भाव (क)	6 प्रश्न

प्रश्नावली 4.1 — पाठ से (मेरी समझ से)

प्रश्न 1

नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (✦) बनाइए— सुलतान के छीने जाने का बाबा भारती पर क्या प्रभाव हुआ? (क) बाबा भारती के मन से चोरी का डर समाप्त हो गया। (ख) बाबा भारती ने गरीबों की सहायता करना बंद कर दिया। (ग) बाबा भारती ने द्वार बंद करना छोड़ दिया। (घ) बाबा भारती असावधान हो गए।

हल

सही उत्तर: (क) बाबा भारती के मन से चोरी का डर समाप्त हो गया।

कहानी के अंत में बाबा भारती कहते हैं — 'अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।' इससे स्पष्ट है कि जब खड्गसिंह ने सुलतान लौटा दिया, तो बाबा भारती को यह विश्वास हो गया कि लोग गरीबों पर दया करना नहीं छोड़ेंगे।

सुलतान के छिन जाने के बाद बाबा भारती ने खड्गसिंह से केवल यह वचन लिया था कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना — ताकि लोग गरीबों पर अविश्वास न करें। अर्थात् उनके मन से चोरी का डर नहीं, बल्कि विश्वास टूटने का भय था।

जब घोड़ा वापस आ गया, तो वह भय भी समाप्त हो गया।

विकल्प (घ) — 'असावधान हो गए' — यह घटना से पहले की अवस्था थी, न कि सुलतान के छिनने का प्रभाव।

उत्तर: (क) बाबा भारती के मन से चोरी का डर समाप्त हो गया।

प्रश्न 2

नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (✦) बनाइए— "बाबा भारती भी मनुष्य ही थे।" इस कथन के समर्थन में लेखक ने कौन-सा तर्क दिया है? (क) बाबा भारती ने डाकू को घमंड से घोड़ा दिखाया। (ख) बाबा भारती घोड़े की प्रशंसा दूसरों से सुनने के लिए व्याकुल थे। (ग) बाबा भारती को घोड़े से अत्यधिक लगाव और मोह था। (घ) बाबा भारती हर पल घोड़े की रखवाली करते रहते थे।

हल

सही उत्तर: (ख) बाबा भारती घोड़े की प्रशंसा दूसरों से सुनने के लिए व्याकुल थे।
पाठ में लिखा है — 'बाबा भारती भी मनुष्य ही थे। अपनी चीज़ की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय भी अधीर हो गया।' यही लेखक का दिया हुआ तर्क है।
अर्थात् भले ही बाबा भारती संत-भाव के व्यक्ति थे, परंतु एक सामान्य मनुष्य की भाँति उन्हें भी अपनी प्रिय वस्तु (सुलतान) की तारीफ़ सुनने की चाह थी — यह मानवीय स्वभाव है।
इसी चाहत में उन्होंने घोड़े को खोलकर उसकी सवारी की, जिसका फ़ायदा उठाकर खड्गसिंह ने घोड़ा छीन लिया।

उत्तर: (ख) बाबा भारती घोड़े की प्रशंसा दूसरों से सुनने के लिए व्याकुल थे।

प्रश्नावली 4.2 — शीर्षक (ग) — वचन

प्रश्न 1

बाबा भारती ने डाकू खड्गसिंह से कौन-सा वचन लिया?

हल

बाबा भारती ने खड्गसिंह से यह वचन लिया कि वह इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करे।
पाठ में बाबा भारती ने कहा — 'मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।'
बाबा भारती को इस बात का डर था कि यदि लोगों को पता चल गया कि एक गरीब-अपाहिज का भेष धारण करने वाले ने उनका घोड़ा ठगी से छीन लिया, तो लोग भविष्य में किसी असली गरीब पर विश्वास न करेंगे और उसकी सहायता से मुँह मोड़ लेंगे।

उत्तर: बाबा भारती ने खड्गसिंह से वचन लिया कि वह इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करे, ताकि दुनिया से गरीबों पर विश्वास न उठे।

प्रश्नावली 4.3 — पंक्तियों पर चर्चा

प्रश्न 1

कहानी में से चुनकर नीचे दी गई पंक्ति का क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार लिखिए— "भगवत-भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता।"

हल

इस पंक्ति का अर्थ है कि बाबा भारती का अधिकांश समय ईश्वर की भक्ति में बीतता था।
जो भी थोड़ा-बहुत समय भजन-पूजा के बाद बचता था, वह पूरी तरह सुलतान घोड़े की देखभाल में लग जाता था।
इससे यह पता चलता है कि सुलतान बाबा भारती को अपनी ईश्वर-भक्ति के बाद दूसरी सबसे प्रिय चीज़ था — वह उसकी सेवा उतनी ही श्रद्धा से करते थे।
'अर्पण हो जाना' शब्द विशेष है — यह भक्ति की भाषा है, जो बताती है कि वे सुलतान के प्रति एक गहरे समर्पण का भाव रखते थे।

उत्तर: इस पंक्ति का अर्थ है कि बाबा भारती भजन-भक्ति के बाद बचा हुआ सारा समय सुलतान की सेवा-देखभाल में लगा देते थे — उनके जीवन में सुलतान का स्थान भक्ति के ठीक बाद था।

प्रश्न 2

कहानी में से चुनकर नीचे दी गई पंक्ति का क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार लिखिए— "बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से।"

हल

इस पंक्ति में दोनों पात्रों की मनोदशा को एक ही वाक्य में सुंदर ढंग से दर्शाया गया है।
बाबा भारती को अपने घोड़े सुलतान पर बड़ा गर्व था — वे घमंड से (गर्व के साथ) उसे खड्गसिंह को दिखा रहे थे।
खड्गसिंह एक कुशल डाकू था जिसने सैकड़ों घोड़े देखे थे, परंतु सुलतान जैसा बाँका घोड़ा उसने कभी नहीं देखा था — इसलिए वह आश्चर्यचकित हो गया।
इस पंक्ति में विरोधाभास भी है — एक तरफ़ संत बाबा भारती 'घमंड' कर रहे हैं, दूसरी तरफ़ खूंखार डाकू 'आश्चर्य' से देख रहा है। लेखक ने इसे कुशलता से दर्शाया है।

उत्तर: इस पंक्ति में बाबा भारती का अपने घोड़े पर गर्व और खड्गसिंह का उस घोड़े को देखकर चकित हो जाना — दोनों भाव एक साथ व्यक्त हुए हैं।

प्रश्न 3

कहानी में से चुनकर नीचे दी गई पंक्ति का क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार लिखिए— "वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए उस पर अपना अधिकार समझता था।"

हल

इस पंक्ति से खड्गसिंह की प्रकृति और सोच का पता चलता है।
एक सामान्य व्यक्ति किसी वस्तु को पसंद करता है तो उसे सही तरीके से प्राप्त करने की कोशिश करता है।

परंतु खड्गसिंह डाकू था — उसकी सोच यह थी कि जो चीज़ उसे अच्छी लगे, वह उसी की है। वह बाहुबल और बेरहमी से उसे छीनने में संकोच नहीं करता था।

सुलतान को देखकर उसके मन में यही भाव आया कि 'ऐसा घोड़ा खड्गसिंह के पास होना चाहिए था।' यह पंक्ति उसके चरित्र की स्वार्थी और बलपूर्वक अधिकार जताने की प्रवृत्ति को उजागर करती है।

उत्तर: इस पंक्ति से खड्गसिंह का चरित्र स्पष्ट होता है — वह बलपूर्वक किसी भी पसंदीदा वस्तु पर अपना अधिकार मान लेता था, यही उसका डाकू-स्वभाव था।

प्रश्न 4

कहानी में से चुनकर नीचे दी गई पंक्ति का क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार लिखिए— "बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका है।"

हल

इस पंक्ति में बाबा भारती की उस मनोदशा का चित्रण है जब खड्गसिंह ने सुलतान छीन लिया था।

'बकरा कसाई की ओर देखता है' — यह उपमा बहुत सटीक है: बकरा जानता है कि कसाई उसे मारेगा, पर वह असहाय है। उसी तरह बाबा भारती जानते थे कि घोड़ा अब मिलना नहीं, फिर भी वे असहाय भाव से खड्गसिंह को देख रहे थे।

फिर भी बाबा भारती ने असाधारण बात कही — 'यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका है' — अर्थात् उन्होंने घोड़े की वापसी के लिए नहीं कहा, बल्कि एक छोटी-सी प्रार्थना की।

यह पंक्ति उनके त्याग और समाज-चिंता को दर्शाती है — वे अपनी सबसे प्रिय चीज़ छोड़ने को तैयार थे, पर समाज में विश्वास बना रहे, यही उनकी एकमात्र चिंता थी।

उत्तर: इस पंक्ति में बाबा भारती की असहायता और महान त्याग का भाव है — वे दुखी थे पर घोड़ा माँग नहीं रहे, बल्कि समाज में गरीबों पर विश्वास बने रहे, इसी की प्रार्थना कर रहे थे।

प्रश्न 5

कहानी में से चुनकर नीचे दी गई पंक्ति का क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार लिखिए— "उनके पाँव अस्तबल की ओर मुड़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई।"

हल

यह पंक्ति कहानी के अंतिम भाग से है जब बाबा भारती सुबह स्नान के बाद अपनी दिनचर्या के अनुसार अस्तबल की ओर चले।

उनके पाँव स्वाभाविक रूप से (आदतन) अस्तबल की दिशा में मुड़ गए — क्योंकि सुलतान की देखभाल उनकी रोज़ की आदत थी।

परंतु फाटक पर पहुँचते ही उन्हें याद आया कि सुलतान तो अब वहाँ है नहीं — खड्गसिंह उसे ले गया है। इसी को 'अपनी भूल प्रतीत हुई' कहा गया है।

यह पंक्ति बाबा भारती के गहरे लगाव और उनकी आदत की गहराई को दर्शाती है — वे जानते थे कि घोड़ा नहीं है, फिर भी पाँव वहीं चले गए।

इसके बाद अचानक सुलतान के हिनहिनाने की आवाज़ सुनकर वे दौड़कर अंदर गए — यह उनके लिए सबसे बड़ी खुशी का क्षण था।

उत्तर: इस पंक्ति में बाबा भारती की आदत और सुलतान के प्रति गहरे लगाव का चित्रण है — पाँव आदतन अस्तबल की ओर चले, पर फाटक पर उन्हें याद आया कि घोड़ा तो अब वहाँ नहीं है।

प्रश्नावली 4.4 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

कहानी को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित पंक्ति के विषय में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए। "दोनों के आँसुओ ं का उस भूमि की मिट्टी पर परस्पर मेल हो गया।" (क) किस-किस के आँसुओ ं का मेल हो गया था?

हल

खड्गसिंह और बाबा भारती — दोनों के आँसुओं का उस भूमि की मिट्टी पर परस्पर मेल हो गया था।
खड्गसिंह रात के अँधेरे में सुलतान को लौटाने के बाद अस्तबल के फाटक के बाहर खड़ा होकर रोया था — उसकी आँखों में पश्चाताप के आँसू थे।
बाबा भारती सुबह अस्तबल से बाहर निकले तो वे भी रो रहे थे — अपने प्रिय घोड़े के वापस आने की खुशी और भावना से भरे आँसू थे।
संयोग यह था कि दोनों उसी स्थान पर खड़े हुए थे और उनके आँसू उसी मिट्टी पर गिरे — एक के पश्चाताप के, दूसरे के आनंद के।

उत्तर: खड्गसिंह (पश्चाताप के आँसू, रात में) और बाबा भारती (खुशी के आँसू, सुबह) — दोनों के आँसुओं का उसी स्थान की मिट्टी पर परस्पर मेल हो गया।

प्रश्न 2

कहानी को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित पंक्ति के विषय में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए। "दोनों के आँसुओ ं का उस भूमि की मिट्टी पर परस्पर मेल हो गया।" (ख) दोनों के आँसुओ ं में क्या अंतर था?

हल

खड्गसिंह के आँसू पश्चाताप के थे। उसने बाबा भारती को धोखा देकर, एक अपाहिज का भेष धरकर, उनका प्रिय घोड़ा छीन लिया था। जब उसे बाबा भारती के ऊँचे विचारों का पता चला — कि उन्हें घोड़े की नहीं बल्कि दुनिया में गरीबों पर विश्वास बने रहने की चिंता थी — तो उसके मन में पश्चाताप जागा और उसने रात को चुपचाप सुलतान लौटा दिया। वह फाटक के बाहर खड़ा होकर रोया।
बाबा भारती के आँसू खुशी और भावुकता के थे। जब उन्होंने सुना कि सुलतान हिनहिना रहा है और वे दौड़कर अंदर गए, तो उन्होंने अपने प्रिय घोड़े के गले से लिपटकर एक पिता की तरह रोए — वे आँसू पुनर्मिलन की खुशी के थे।
एक के आँसू अपने पाप के पछतावे के थे, दूसरे के आँसू प्रेम और खुशी के थे — परंतु दोनों का मेल उसी धरती पर हुआ जो इस पूरी घटना की साक्षी थी।

उत्तर: खड्गसिंह के आँसू पश्चाताप के थे (उसने धोखे से घोड़ा छीना था, बाबा के ऊँचे विचारों ने उसे पिघला दिया); बाबा भारती के आँसू खुशी और प्रेम के थे (सुलतान वापस मिला)।

प्रश्नावली 4.5 — कैसे-कैसे पात्र

प्रश्न 1

इस कहानी में तीन मुख्य पात्र हैं— बाबा भारती, डाकू खड्गसिंह और सुलतान घोड़ा। इनके गुणों को बताने वाले शब्दों से दिए गए शब्द-चित्रों को पूरा कीजिए। पाठ के अनुसार बाबा भारती के गुण बताइए।

हल

बाबा भारती के प्रमुख गुण (विशेषण):
दयालु — उन्होंने अपाहिज (वेशधारी खड्गसिंह) पर दया करके उसे घोड़े पर बिठाया।
भक्त / धर्मनिष्ठ — वे गाँव से बाहर मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे।
विवेकशील — घोड़ा छिनने के बाद भी उन्होंने केवल समाज में विश्वास बनाए रखने की चिंता की।
त्यागी — सब कुछ छोड़ दिया था — रुपया, माल, असबाब, ज़मीन।
उदार / महान विचारों वाले — अपनी सबसे प्रिय चीज़ खोकर भी दूसरों की चिंता की।

उत्तर: बाबा भारती — दयालु, भक्त, त्यागी, विवेकशील, उदार।

प्रश्न 2

इस कहानी में तीन मुख्य पात्र हैं— बाबा भारती, डाकू खड्गसिंह और सुलतान घोड़ा। इनके गुणों को बताने वाले शब्दों से दिए गए शब्द-चित्रों को पूरा कीजिए। पाठ के अनुसार डाकू खड्गसिंह के गुण/विशेषताएँ बताइए।

हल

डाकू खड्गसिंह की प्रमुख विशेषताएँ (विशेषण):
बाहुबली — उसके पास बाहुबल था और वह जो वस्तु पसंद करता, उस पर अपना अधिकार समझता था।
प्रसिद्ध डाकू — सारे इलाके में उसका नाम था, लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे।
चतुर / चालाक — उसने अपाहिज का भेष धरकर बाबा भारती को धोखा दिया।
पश्चातापी / परिवर्तनशील — बाबा भारती के ऊँचे विचारों से प्रभावित होकर उसने रात में घोड़ा वापस कर दिया और रोया।
घोड़ों का जानकार — उसने सैकड़ों घोड़े देखे थे, सुलतान को देखकर वह चकित रह गया।

उत्तर: डाकू खड्गसिंह — बाहुबली, चालाक, प्रसिद्ध डाकू, परंतु अंततः पश्चातापी और परिवर्तनशील।

प्रश्न 3

इस कहानी में तीन मुख्य पात्र हैं— बाबा भारती, डाकू खड्गसिंह और सुलतान घोड़ा। इनके गुणों को बताने वाले शब्दों से दिए गए शब्द-चित्रों को पूरा कीजिए। पाठ के अनुसार सुलतान घोड़े की विशेषताएँ बताइए।

हल

सुलतान घोड़े की प्रमुख विशेषताएँ (विशेषण):
सुंदर — 'वह घोड़ा बड़ा सुंदर था।' खड्गसिंह जैसे अनुभवी व्यक्ति ने भी उसे देखकर कहा कि ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुजरा था।

बलवान — 'बड़ा बलवान' — उसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था।
तेज़ / फुर्तीला — 'घोड़ा हवा से बातें करने लगा' — उसकी चाल अत्यंत तीव्र थी।
स्वामिभक्त — उसने अपने स्वामी बाबा भारती के पाँवों की चाप पहचानकर जोर से हिनहिनाया।
बाबा भारती के अनुसार उसकी चाल ऐसी थी 'जैसे मोर घटा को देखकर नाच रहा हो।'

उत्तर: सुलतान घोड़ा — सुंदर, बलवान, तेज़/फुर्तीला, स्वामिभक्त।

प्रश्नावली 4.6 — मन के भाव (क)

प्रश्न 1

कहानी में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। बताइए, कहानी में कौन, कब, ऐसा अनुभव कर रहा था— चकित

हल

चकित — खड्गसिंह, जब उसने पहली बार सुलतान घोड़े को देखा।
पाठ में: 'उसने सैकड़ों घोड़े देखे थे, परंतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुजरा था। कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा।'
बाबा भारती भी चकित हुए जब अपाहिज (खड्गसिंह) घोड़े की पीठ पर तनकर बैठ गया और घोड़ा दौड़ाने लगा — 'उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा।'

उत्तर: चकित — (1) खड्गसिंह, जब उसने पहली बार सुलतान को देखा; (2) बाबा भारती, जब अपाहिज अचानक घोड़ा लेकर भाग गया।

प्रश्न 2

कहानी में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। बताइए, कहानी में कौन, कब, ऐसा अनुभव कर रहा था— प्रसन्नता

हल

प्रसन्नता — मुख्यतः बाबा भारती।
(1) जब वे सुलतान को देखते थे: 'देख-देखकर प्रसन्न होते थे।'
(2) जब वे संध्या को सवारी के लिए निकले: 'इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता।'
(3) जब सुलतान हिनहिनाया और वे दौड़कर अस्तबल में घुसे: 'बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे।'
खड्गसिंह भी प्रसन्न हुआ था जब उसने पहली बार सुलतान को देखा: 'विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे' — यह बाबा भारती ने कहा था, और खड्गसिंह भी उसकी सुंदरता से प्रभावित हुआ।

उत्तर: प्रसन्नता — बाबा भारती, जब वे सुलतान को देखते थे, संध्या सवारी को निकलते समय, और सुलतान के वापस मिलने पर।

प्रश्न 3

कहानी में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। बताइए, कहानी में कौन, कब, ऐसा अनुभव कर रहा था— अधीर

हल

अधीर — दो पात्रों ने यह भाव अनुभव किया, अलग-अलग संदर्भों में:
(1) खड्गसिंह — जब उसने सुलतान की कीर्ति सुनी और उसे देखने के लिए बेचैन हो गया: 'उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा।' वह घोड़े की चाल देखना चाहता था, इसीलिए 'बालकों की-सी अधीरता से' बोला।
(2) बाबा भारती — जब खड्गसिंह ने सुलतान की प्रशंसा की: 'अपनी चीज़ की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय भी अधीर हो गया।' इसी अधीरता में उन्होंने घोड़े को खोलकर सवारी की।

उत्तर: अधीर — (1) खड्गसिंह, जब सुलतान को देखने के लिए बेचैन हुआ; (2) बाबा भारती, जब अपनी प्रशंसा (सुलतान की तारीफ) दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय अधीर हो गया।

प्रश्न 4

कहानी में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। बताइए, कहानी में कौन, कब, ऐसा अनुभव कर रहा था— करुणा

हल

करुणा — अपाहिज वेशधारी खड्गसिंह की आवाज़ में करुणा थी, जब उसने बाबा भारती को रोका।
पाठ में: 'सहसा एक ओर से आवाज़ आई, "ओ बाबा, इस कंगले की सुनते जाना।" आवाज़ में करुणा थी।'
यह करुणा खड्गसिंह द्वारा अपनाया गया छल था — वह अपाहिज बना था और करुणा का भाव अपनी आवाज़ में लाकर बाबा भारती को रोकना चाहता था।
बाबा भारती करुणा से प्रभावित हुए और उन्होंने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर बिठाया — यह उनकी दयालुता और करुणाशीलता को दर्शाता है।

उत्तर: करुणा — अपाहिज का भेष धरे खड्गसिंह की आवाज़ में करुणा थी (वह छल से बाबा भारती को रोक रहा था); बाबा भारती उस करुणा-भरी आवाज़ से द्रवित होकर उसकी सहायता के लिए रुके।

प्रश्न 5

कहानी में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। बताइए, कहानी में कौन, कब, ऐसा अनुभव कर रहा था— डर

हल

डर — बाबा भारती, जब खड्गसिंह ने कहा 'बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।'
पाठ में: 'बाबा भारती डर गए। अब उन्हें रात को नींद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता।'
यह डर सुलतान को खो देने का भय था — उन्होंने कई महीनों तक रात को जागकर पहरा दिया।

उत्तर: डर — बाबा भारती, जब खड्गसिंह ने सुलतान छीनने की धमकी दी; वे रातों को जागकर पहरा देते थे।

प्रश्न 6

कहानी में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। बताइए, कहानी में कौन, कब, ऐसा अनुभव कर रहा था— निराशा

हल

निराशा — बाबा भारती, दो अवसरों पर:
(1) जब सुलतान छीन लिया गया: पाठ में 'उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई' — जब अपाहिज (खड्गसिंह) घोड़ा लेकर भाग गया।
(2) जब सुबह वे अस्तबल की ओर गए: 'घोर निराशा ने पाँव को मन-मन-भर का भारी बना दिया' — फाटक पर पहुँचकर उन्हें याद आया कि सुलतान तो अब वहाँ नहीं है।

उत्तर: निराशा — बाबा भारती: (1) जब खड्गसिंह घोड़ा लेकर भाग गया (भय-विस्मय-निराशा मिली चीख); (2) जब सुबह फाटक पर पहुँचकर याद आया कि सुलतान नहीं है।